International Journal of Research
e-ISSN: 2348-6848 & p-ISSN 2348-795X Vol-5, Special Issue-9
International Seminar on Changing Trends in Historiography: A Global Perspective
Held on 2nd February 2018 organized by The Post Graduate Department of History. Dev Samaj College for Women, Ferozepur City, Punjab, India

हूण वंश द्वारा भारतीय इतिहास में शैव धर्म प्रसार व बौद्ध धर्म के विध्वंश का प्राथमिक स्रोतों के आधार पर एक विश्लेषण

अमित कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

निर्मल कौर

छात्रा, *MA*, इतिहास, (द्वितीय वर्ष) देव समाज कालेज फॉर वीमेन, फिरोजपुर शहर, पंजाब

शोध संक्षेप

भारतीय इतिहास में पांचवी शताब्दी हूण शासन के लिए ख्यात है। विशेषकर तोरमाण और मिहिरकुल की कीर्ति से भारतीय इतिहास ज्वलंत है। हूण गंधार, सिधु, मारवाड़, पश्चिमी राजस्थान, मालवा प्रदेशों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने में सफल रहे थे। हूण शासन का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण है मध्यप्रदेश के सागर में मिले वाराह मूर्ति पर अंकित तोरमाण के अभिलेख। जैन ग्रंथों में भी हूण शासन के केंद्र के रूप में चंद्रभागा नदी के किनारे स्थित पवैय्या नगरी को बताया गया है । संभवतः यह पवैय्या नगरी वर्तमान मध्य प्रदेश में ग्वालियर के पास स्थित थी। इस शोधपत्र में मैंने हूण वंश द्वारा भारत में शैव धर्म के प्रचार तथा बौद्ध शर्म के विनाश से सम्बंधित इतिहास में प्रछन्न प्रमाणों को प्रकाशित व विश्लेषित करने का प्रयास किया है जिनका भारतीय इतिहास के राजनैतिक व धार्मिक विकास में अभूतपूर्व महत्व है।

मुख्य शब्द – मिहिर कुल, तोरमाड़, हूण, शैव धर्म

भूमिका

तोरमाण व उसके पुत्र मिहिरकुल के विजय अभियान के बारे में विवरण ग्वालियर के सूर्य मंदिर के एक अभिलेख से प्राप्त होता है। हूणों के मालवा क्षेत्र में मजबूती से इतिहास में अभूतपूर्व विकास दृष्टिगोचर होता है। कुछ ही वर्षों में हूणों ने उत्तर भारत पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और इतने शक्तिशाली हो गए कि उन्होंने गुप्तों से भी नजराना वसूल करना शुरू कर दिया। मिहिरकुल की राजधानी पंजाब में स्यालकोट थी जहाँ उसके शैव अनुयायी होने के पुख्ता प्रमाण मिले हैं। मिहिरकुल की शिवभक्ति उसके द्वारा बनवाये गये अनगिनत शिव मंदिरों से भी परिलक्षित होती है।

मंदसौर अभिलेख में उल्लिखित है कि मिहिरकुल ने भगवान् शिव के अतिरिक्त अन्य किसी के समक्ष अपना शीश नहीं झुकाया था। इस अभिलेख में भगवान् शिव का उल्लेख 'स्थाणु' नाम से किया गया है। कालांतर में उसकी पराजय यशोवर्मन से होने पर उसे नत होना पड़ा था। ग्वालियर अभिलेख में मिहिरकुल अपने को शिव भक्त कहते नहीं थकता। उसके सिक्कों पर 'जयतु वृष' अंकित है जो भगवान् शिव को ही कहा गया है।

मिहिरकुल के शैव भक्ति व शक्तिशाली शासन के सन्दर्भ में हमे *कास्मोस इन्दिकप्लेस्तेस* नामक एक यूनानी के यात्रा वृत्त "क्रिस्चियन टोपोग्राफी" ग्रन्थ में प्रचुर सुचना प्राप्त होती है। इस यात्रा वृत्तान्त में स्पष्ट लिखा हैं की हूण भारत के उत्तरी पहाड़ी इलाको में रहते हैं, उनका राजा मिहिरकुल एक विशाल घुड़सवार सेना और कम से कम दो हज़ार हाथियों के साथ चलता हैं, वह परम शैव भक्त तथा भारत का स्वामी हैं।

ह्वेनसांग के प्रमाण - शैव धर्म की प्रतिस्थापना और बौद्ध धर्म का विनाश

मिहिरकुल के शैव अनुगमन का विवरण चीनी बौद्ध यात्री ह्वेन सांग भी देता है जो उसके शासनकाल के लगभग सौ वर्ष बाद 629 इसवी में भारत आया , ह्वेनसांग अपने ग्रन्थ "सी-यू-की" में लिखता हैं की सैंकडो वर्ष पहले मिहिरकुल नाम का एक शिवभक्त व प्रतापी राजा हुआ करता था जिसकी राजधानी स्यालकोट थी । ह्वेनसांग के अनुसार मिहिरकुल नैसर्गिक रूप से प्रतिभाशाली और योग्य था।

ह्वेनसांग शैव भक्त मिहिरकुल के बौद्ध धर्म विद्वेष के सन्दर्भ में भी महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदान करता है। वह यह भी रिकार्ड करता है कि मिहिरकुल ने बौद्ध धर्म को काफी नुकसान पहुंचाया। ह्वेनसांग लिखता हैं कि "एक बार मिहिरकुल ने बौद्ध भिक्षुओं से बौद्ध धर्म के बारे में जानने कि इच्छा व्यक्त की। परन्तु बौद्ध भिक्षुओं ने उसका अपमान किया, उन्होंने उसके पास, किसी वरिष्ठ बौद्ध स्थविर को भेजने की जगह एक श्रामनेर भेज दिया। मिहिरकुल को जब यह ज्ञात हुआ तो वह इतना क्रोधित हुआ कि बौद्ध धर्म के विनाश कि राजाज्ञा जारी कर दी। फलतः उत्तर भारत के सभी बौद्ध बौद्ध मठ तोड़ डाले गये और भिक्षुओं का कत्ले-आम करा दिया गया"। ह्वेनसांग इस बात को सिद्ध करने का प्रयास करता है कि मिहिरकुल ने बौद्ध धर्म का उत्तरी भारत से नामोनिशान मिटा डाला था।

राज तरंगिणी में अंकित मिहिर कुल की शैव भक्ति

मिहिरकुल की शैव भक्ति के सन्दर्भ में प्रमाणिक सुचना प्रदान करने वाला अन्य महत्वपूर्ण ग्रन्थ है 'कल्हण' की 'राजतरंगीनी'। मिहिरकुल के वर्चश्व के अंतर्गत कश्मीर भी था जो कभी उसके भाई के विद्रोह के कारण उसके हाथ से जाता रहा था लेकिन अपने शौर्य से मिहिरकुल ने इसे पुनः विजित कर लिया। कल्हण अपने ग्रन्थ में मिहिरकुल को एक वीर विजेता सिद्ध करता है। वह यह भी कहता है कि मिहिरकुल पहाड़ से हाथी को फेंकवा देता था और जब हाथी पीड़ा में निनाद करता तो वह आनंदित होता था। कल्हण के नुसार मिहिरकुल का साम्राज्य हिमालय से सिंघल द्वीप तक विस्तृत था। उसने कश्मीर में मिहिरपुर नगर बसाकर वहां मिहिरेशवर नामक भव्य शिव मंदिर बनवाया था। उसने गांधार इलाके में 700 ब्राह्मणों को अग्रहार (ग्राम) दान में दिए थे। कल्हण मिहिरकुल हूण को ब्राह्मणों के समर्थक एक अनन्य शिव भक्त के रूप में प्रस्तुत करता हैं।

'हर हर महादेव'- एक हूण मन्त्र है

मिहिरकुल के अतिरिक्त इस वंश के सभी राजा शिवभक्त थे। इन सभी शासकों ने अद्भुत शिव मंदिरों की श्रृंखला का निर्माण किया था। उत्तराखंड का महादेव मंदिर, हनोल का शैव मंदिर, जौनसार में स्थित बावर मंदिर हूण स्थापत्य शैली का शानदार नमूना हैं। किम्वदंती हैं कि इसे हूण भट ने बनवाया था और भट का अर्थ योद्धा होता हैं ।

हर हर महादेव का जय घोष भी हूणों से जुडा है। हारा-हूण हूणों की दक्षिणी शाखा थी जिससे हाड़ा राजपूतों की उत्पत्ति हुई है। इन्ही की पीढियां राजस्थान में हाडौती कहलाती हैं। यह हाडौती हूण का ही अपभ्रंश है। प्रसिद्ध इतिहासकार वी। ए। स्मिथ, विलियम क्रुक आदि ने गुर्जरों को श्वेत हूणों से सम्बंधित माना हैं। इतिहासकार कैम्पबेल और डी। आर। भंडारकर गुर्जरों की उत्पत्ति श्वेत हूणों की खज़र शाखा से मानते हैं । बूंदी इलाके में रामेश्वर महादेव, भीमलत और झर महादेव हूणों के बनवाये प्रसिद्ध शिव मंदिर हैं। बिजोलिया, चित्तोरगढ़ के समीप स्थित मैनाल कभी हूण राजा अन्गत्सी की राजधानी थी, जहा हूणों ने तिलस्वा महादेव का मंदिर बनवाया था। कर्नल टाड़ के अनुसार बडोली, कोटा में स्थित सुप्रसिद्ध शिव मंदिर पंवार/परमार वंश के हूणराज ने बनवाया था। इस प्रकार हम देखते हैं की हूण और उनका नेता मिहिरकुल भारत में बौद्ध धर्म के अवसान और शैव धर्म के विकास से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हैं।

निष्कर्ष

मिहिरकुल और तोरमाण के वंशज कालांतर में भारतीय राजपूतों में सम्मिलित होते गये और शैव धर्म को जहाँ इन्होने पुनर्जीवित किया वहीँ भारत में बौद्ध धर्म को विनष्ट भी किया। भारत में हूणों के शैव भक्ति का प्रमाण कल्हण, ह्वेन सान्ग, कोसमोस समेत अनेक अभिलेखों व वृत्तान्तों से प्राप्त होता है। हिंदुत्व के विकास में हूणों का यह योगदान बड़ा है तथा महत्वपूर्ण भी। एक विदेशी आक्रान्ता वंश द्वारा भारतीय आध्यात्म, धर्म तथा मूल्यों को आत्मसात करना तथा इसका विकास करना एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक महत्व रखता है जिसका विश्लेषण मैंने इस शोधपत्र में किया है।

रेफरेंस

1. K C Ojha, History of foreign rule in Ancient India, Allahbad, 1968.
2. Prameswarilal Gupta, Coins, New Delhi, 1969.
3. R C Majumdar, Ancient India
4. Rama Shankar Tripathi, History of Ancient India, Delhi, 1987.
5. Atreyi Biswas, The Political History of Hunas in India, Munshiram Manoharlal Publishers, 1973.
6. Upendera Thakur, The Hunas in India.
7. Tod, Annals and Antiquities of Rajasthan, vol.2
8. J M Campbell, The Gujar, Gazeteer of Bombay Presidency, vol.9, part.2, 1896
9. D R Bhandarkarkar Gurjaras, J B B R A S, Vol.21, 1903
10. Tod, Annals and Antiquities of Rajasthan, edit. William Crooke, Vol.1, Introduction
11. P C Bagchi, India and Central Asia, Calcutta, 1965
12. V A Smith, Earley History of India